Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A multidisciplinary, peer reviewed and refereed Research Journal)
Vol. 2, Issue.4, April 2023, PSR-2304007

भारत की विदेश नीति की उपलब्धियां@ 75

डा० संजय गौतम
सहायक आचार्य
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
शिवहर्ष किसान पी0जी0 कॉलेज, बस्ती

अंतरराष्ट्रीय समाज में एक वैश्विक शक्ति बनने के लिए न केवल सैनिक अथवा आर्थिक रूप से समृद्धिशाली होना आवश्यक है अपितु उस देश की एक सुनिश्चित विदेश नीति का होना भी आवश्यक है। एक सफल विदेश नीति उसे कहा जाता है जो अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में राष्ट्रीय हितों के अनुरूप विदेश नीति को केंद्र में रखकर तथा स्वदेश के लोकमत का ध्यान रखते हुए अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफलता प्राप्त कर सके। लेकिन इन तथ्यों के साथ इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता की अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम में ऐतिहासिक परिवर्तनों के साथ या आंतरिक रूप से उथल–पुथल के साथ सामाजिक, आर्थिक अथवा राष्ट्रीय हित भी पुनर्परिभाषित होते रहते हैं।[1]
अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में किसी भी राष्ट्र कि उसकी स्थिति का निर्धारण उसके विदेश नीति द्वारा ही होता है! **श्लाईचर** ने विदेश नीति के संदर्भ में ठीक ही कहा है कि "विदेश नीति एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र के साथ अपने संबंधों के संचालन के लिए योजनाओं, उद्देश्यों एवं क्रियाओं का सामूहिक रूप है।"[2]
स्वतंत्रता से पूर्व भारत एक औपनिवेशिक देश था। यह देश लंबे अर्से तक अंग्रेजों के अधीन था जिसके कारण भारत के सैद्धांतिक रूप में अपनी स्वतंत्र विदेश नीति विकसित नहीं हो पाई थी। लेकिन भारत की स्वतंत्र विदेश नीति का विचार स्वतंत्रता के लिए आंदोलनरत् उन नेताओं के मन में थी जो भारतीय स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत् थे। भारतीय स्वतंत्रता के समय शीतयुद्ध का दौर चल रहा था जिसके कारण विश्व दो गुटों में बटा हुआ था। जिसमें से एक गुट का नेतृत्व सोवियत संघ एवं दूसरे का अमेरिका कर रहा था। भारत चुकि एक लंबे समय के बाद परतंत्रता के जाल से बाहर आया था इसलिए किसी शक्ति गुट के साथ न जाकर अपनी स्वतंत्र विदेश नीति व संप्रभुता की इच्छा रखता था। उक्त कारण से भारत ने कुछ समयान्तराल बाद अंतरराष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में गुटनिरपेक्षता की नीति का मार्ग अपनाया। गुटनिरपेक्षता की नीति भारत के लिए एक मार्गदर्शक होने के साथ–साथ विदेश नीति का लंबे समय के लिए आधार बन गयी। भारत अपनी स्वतंत्रता के बाद शीत युद्ध काल में बदलती वैश्विक राजनीति में भी अपने विदेशनीति के सिद्धांतों पर कायम रहा। भारत की विदेश नीति समानता, स्वतंत्रता, गुटनिरपेक्षता लोकतांत्रिक सिद्धांत, पंचशील, वसुधैव कुटुंबकम, उपनिवेशविरोधी, रंगभेदविरोधी, नस्लभेदविरोधी, साम्राज्यवादविरोधीव अंतरराष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण निस्तारण विश्व शांति का पोषक आदि सिद्धांतों पर आधारित रहा है। अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 के अंतर्गत रखा गया है जो भारतीय विदेश नीति का भी हिस्सा है।[3]

भारत की वर्तमान विदेशनीति की बदलती प्राथमिकताएं:
वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आदर्शवाद की नीति केवल सैद्धांतिक रूप में ही दिखाई पड़ती है। व्यावहारिक रूप में राष्ट्र, शक्ति की राजनीति को ही अपनाते हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है की अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्ति का तत्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति भी अन्य प्रकार की राजनितियों की भांति शक्ति के लिए ही संघर्ष है अंतरराष्ट्रीय राजनीति में किसी भी प्रकार के लक्ष्य हासिल करने के पीछे शक्ति ही ज्यादातर काम करती हैं।[4]अंतरराष्ट्रीय राजनीति में मानवीय अंतर्संबन्धों एवं इन्हें प्रभावित करने वाले उन सभी तत्वों का भी अध्ययन होता है जो अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक राष्ट्र की सीमा के वाह्य तत्वों के रूप में शामिल हैं।[5]
राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक संबंधों के विकास के अनेक अवसरों की उपलब्धता को देखते हुए अंतरराष्ट्रीय संबंध आज के वैश्विक परिपेक्ष में गंभीर रूप से प्रभावित है।[6] अंतरराष्ट्रीय राजनीति में दो राष्ट्रों के मध्य सम्बन्ध केवल पारस्परिक ही नहीं होता अपितु वह उस काल एवं परिस्थिति के अनुसार वैश्विक महत्व का भी विषय होता है। आज पूरी दुनिया एक वैश्विक ग्राम में परिवर्तित हो चुकी है, मनुष्य को उसकी प्रकृति एवं स्वभाव के अनुसार एक सामाजिक प्राणी की संज्ञा दिया जाता है, इसलिए समाज से अलग एकल व्यक्ति को जानवर अथवा ईश्वर की संज्ञा दी जाने लगी है।[7]

किसी भी राष्ट्र के लिए अपने अस्तित्व को बनाए रखने एवं अपनी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए के लिए अंतर्राष्ट्रीय समाज में रहना आवश्यक होता है।[8] अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अंतरराष्ट्रीय संबंधों का महत्व वहां और भी बढ़ जाता है जहां दो पड़ोसी राष्ट्रों के मध्य द्विपक्षीय रूप से रिश्तों की बात आती है।[9]

वर्ष 2014 में भारत में स्थापित मोदी सरकार क्षेत्रीय शक्तियों के साथ–साथ वैश्विक शक्तियों के साथ आगे बढ़ने एवं राष्ट्रीय सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ करने तथा राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देने के लिए विश्व के अनेक देशों के साथ परस्पर वार्ता का मार्ग अपनाते हुए उनके साथ व्यापारिक संबंधों को बढ़ावा दे रही है।

रक्षा के क्षेत्र में भारत लगातार आत्मनिर्भरता को प्राप्त करने के साथ–साथ रक्षा उत्पादों को निर्यात भी करना प्रारंभ कर दिया है। पिछले कुछ समय से चले आ रहे रूस–यूक्रेन संघर्ष में भी भारत ने अमेरिका और रूस के साथ संबंधों में संतुलन स्थापित करते हुए एक सफल विदेश नीति का परिचय दिया है।

वर्ष 2019 में मोदी सरकार ने अपने 5 वर्ष का कार्यकाल पूरा करते हुए विदेश नीति में व्यापक बदलाव किया। भारत के विदेश सचिव विजय गोखले ने 2019 में दिल्ली में हुए "रायसीना डायलॉग" में कहा कि 'गुटनिरपेक्षता भले ही भारत के अतीत रहा हो लेकिन भारत आज अपने हितों को देखते हुए अंतरराष्ट्रीय वैश्विक संबंधों पर फोकस कर रहा है।' इसके साथ ही विदेश सचिव गोखले ने वैश्विक मंच के माध्यम से भारत की भूमिका बढ़ाने के साथ–साथ भारत–प्रशांत क्षेत्र एवं जी–20 में भारत की भूमिका पर भारत के भविष्य के निर्भरता की बात कही।

दिल्ली में हुए "रायसीना डायलॉग" से लगभग 4 वर्ष पूर्व 2015 में "इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्ट्रैटेजिक स्टडीज" में तत्कालीन विदेश सचिव एस0 जयशंकर ने चीन और अमेरिका के संदर्भ में अपना एक वक्तव्य दिया था जिसमें उन्होंने स्वीकारा था कि आज भारत की इच्छा एक संतुलित शक्ति (बैलेंसिंग पावर) न होकर बल्कि एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने की है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी यही सपना है कि भारत को संतुलित शक्ति (बैलेंसिंग पावर) की सीमित सोच से बाहर निकाल कर किस प्रकार वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करें तथा भारत की भूमिका को किस प्रकार अंतरराष्ट्रीय मंच पर बढ़ाया जाए तथा नई प्राथमिकताओं को परिभाषित किया जाए।[4] भारतीय विदेश सचिव के उक्त बयान से भारतीय विदेश नीति के प्राथमिकताओं में हुए बदलाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं।

इसके साथ–साथ इस क्षेत्र में अनेक चुनौतियां भी विद्यमान है जैसे–निजी क्षेत्र में भागीदारी की कमी आधुनिक प्रौद्योगिकियों की कमी, अनुसंधान व विकास हेतु निवेश की कमी, डिजाइन छमता इत्यादि ऐसी चुनौतियां हैं जो आत्मनिर्भरता के लक्ष्य प्राप्ति के समक्ष एक बाधक के रूप में खड़ी हैं।

भारतीय विदेश नीति के मौलिक उद्देश्य

पिछले 75 वर्षों की विकास यात्रा में भारत को जिस प्रकार गरीब, विकासशील एवं उभरती हुई अर्थव्यवस्था के रूप में देखा जा रहा था उसकी तुलना में आज की स्थिति काफी भिन्न है। वर्तमान भारत वैश्विक परिप्रेक्ष्य में एक वैश्विक नेतृत्वकर्ता देश के रूप में देखा जा रहा है तथा इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने के साथ–साथ विश्व जनमत को भी प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

भारतीय विदेश नीति प्रारंभ से ही शांति, मैत्री एवं समानता तथा सहयोग व सद्भावना के सिद्धांत का पालन किया है।

यद्यपि किसी भी देश की विदेश नीति के मूल में राष्ट्रीय हितों को ज्यादातर महत्व दिया जाता है लेकिन भारत ने सदैव विदेश नीति के निर्माण में राष्ट्रीय हितों के साथ–साथ दूसरे देशों के आत्मसम्मान और प्रतिष्ठा को भी ध्यान में रखा है।

भारतीय विदेश नीति के कुछ प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास
- अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए प्रयासरत रहना
- अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण निपटारा
- सैन्य गुटबंदी एवं इस प्रकार के समझौतों से स्वयं को पृथक रखना
- रंगभेद उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद का विरोध करना अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का पालन एवं उसमें आस्था रखना
- अंतरराष्ट्रीय मंच पर मैत्री एवं सहयोग के माध्यम से अपनी प्रतिष्ठा को सुदृढ़ करना
- वसुधैव कुटुंबकम की भावना का विकास आदि ऐसे उद्देश्य है जो भारतीय विदेश नीति के पहचान है !

उपरोक्त मौलिक उद्देश्यों के अतिरिक्त देश के अनुकूल समावेशी घरेलू विकास हेतु एक बाह्य परिवेश विकसित करना है इसका लाभ यह होगा कि यह विदेशी राष्ट्रों को भारत में निवेश एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए आकर्षित करेगा जिससे भारत में चल रहे अनेक विकास कार्यक्रम यथा– मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया आदि इस प्रकार के कार्यक्रम को नया संबल मिलने के साथ–साथ डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी बनाने एवं भारत में वैश्विक बुनियादी ढांचे को भी विकसित करने का सपना साकार किया जा सकेगा।[5]

लुक ईस्ट पॉलिसी से एक्ट ईस्ट पॉलिसी तक–[From Look East Policy To Act East Policy]

1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ शीत युद्ध समाप्त हो गया लेकिन इसमें जाते–जाते एशिया के उन तमाम देशों के सामने इस क्षेत्र में बदलते आर्थिक और सामरिक परिस्थितियों से निपटने के लिए अपनी अपनी नीतियों की समीक्षा हेतु विचार करने को बाध्य कर दिया। 1992 में भारत द्वारा आर्थिक सुधार हेतु तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री पी0वी0 नरसिम्हा राव ने (लुक

ईस्ट पॉलिसी)"पूर्व की ओर देखो की नीति" की शुरुआत की थी।[6] उस समय भारत की अर्थव्यवस्था कमजोर थी क्योंकि सोवियत संघ के पतन हो जाने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था काफी हद तक प्रभावित हुई और इसने भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए विकल्प के तौर पर दक्षिण–पूर्व एशिया की तरफ देखने को प्रेरित किया जिसके अंतर्गत दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ व्यापारिक संबंध बढ़ाने तथा निवेश पर फोकस किया गया।

आर्थिक सुधार के इस क्रम में वर्ष 2014 में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के सत्ता में आने के बाद बदलती परिस्थितियों ने इसमें कुछ सुधार के संकेत दिए जिसके अंतर्गत भारत ने "एक्ट ईस्ट पॉलिसी" की शुरुआत की। एक्ट ईस्ट पॉलिसी एक आर्थिक पहल के रूप में हिंद–प्रशांत क्षेत्र में फैले पड़ोसी देशों पर केंद्रित है जिसका उद्देश्य निरंतर जुड़ाव के जरिए आर्थिक और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ाने के साथ–साथ पूर्वोत्तर राज्यों को बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करने हेतु हिंद–प्रशांत क्षेत्र में विस्तारित पड़ोसियों के साथ रणनीतिक संबंध विकसित करना है।

भारत ने रणनीतिक साझेदार के रूप में इंडोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम, कोरियाई गणराज्य, जापान, सिंगापुर,, ऑस्ट्रेलिया और आसियान देशों को शामिल किया है। इसके अतिरिक्त पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (East Asea Summit) आसियान, आसियान क्षेत्रीय मंच (ARF), बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय मंचों में शामिल होने के साथ–साथ अन्य स्तरों पर चल रहे पहल हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA), मेकांग गंगा सहयोग पर भी जोर दिया गया है।[7]

इसके अलावा एक्ट ईस्ट पॉलिसी की शुरुआत दक्षिण चीन सागर एवं हिंद महासागर परिक्षेत्र में चीन की बढ़ते दखल को रोकने एवं बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य से निपटने के लिए भी किया गया है।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी के अंतर्गत पूर्वोत्तर के विकास पर पूर्व की भांति अब और अधिक ध्यान दिया जा रहा है, क्योंकि भारत ऐसा मानता है कि पूर्वोत्तर का यह क्षेत्र पूर्वी एशिया के साथ–साथ दक्षिण–पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार है। इस क्षेत्र में बेहतर कनेक्टिविटी विकसित करने हेतु भारत द्वारा बुनियादी ढांचे का निर्माण भी कराया जा रहा है।

बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था (MECR-Multilateral Export Control Regimes)में भारत का प्रवेश:

बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था (MECR-Multilateral Export Control Regimes) सामूहिक विनाश के हथियारों(WMD-Weapons Of Mass Destruction),वितरण प्रणाली एवं उन्नत किस्म के परंपरागत हथियारों के प्रसार को नियंत्रित करने हेतु एकसमान विचारधारा वाले देशों का एक अनौपचारिक समूह है। इसके अतिरिक्त कुछ सैन्य एवं दोहरे उपयोग वाले प्रौद्योगिकी (Dual Use Technology) को रोकने वाले कुछ आपूर्तिकर्ता देशों द्वारा निर्मित एक गैर बाध्यकारी एवं स्वैच्छिक समझौता है।

उक्त उद्देश्य हेतु बनाए गए बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था के अंतर्गत चार प्रकार की व्यवस्थाएं हैं जो इस प्रकार हैं –

1.परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह–Nuclear Supplier Group

2.आस्ट्रेलिया समूह–Australia Group

3.मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था–Missile Technology Control Regime

4. वासेनार व्यवस्था –Wassenar Arrangement

उपरोक्त चार समूहों में से तीन में भारत को प्रवेश मिल चुका है जिसका विवरण इस प्रकार है –

27 जून 2016 को भारत को मिसाइल प्रौद्योगिकी समूह के 35 वें सदस्य का दर्जा हासिल करने में सफलता मिली। भारत में जून 2015 में इस समूह की सदस्यता के लिए आवेदन किया था।

एम0टी0सी0आर0(MTCR- Missile Technology Control Regimes) को मिसाइल, राकेट एवं मानवरहित वायुयान वाहन (Drone) एवं इससे संबंधित प्रसार को नियंत्रित करने के उद्देश्य से बनाया गया है।[8]

दिसंबर 2017 में भारत को बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था के अंतर्गत वासेनार व्यवस्था-(Wassenar Arrangement) का 42 वां सदस्य राष्ट्र का दर्जा प्राप्त हुआ यह एमटीसीआर ग्रुप में सफलता पाने के बाद दूसरी सबसे बड़ी सफलता थी।

वासेनार व्यवस्था के अंतर्गत परंपरागत शस्त्रों, दोहरे उपयोग वाले प्रौद्योगिकियों के निर्यात व हस्तांतरण संबंधी सूचनाओं का आदान– प्रदान किया जाता है जिससे क्षेत्रीय व अंतरराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को बढ़ावा दिया जा सके।[9]

इस क्रम में भारत को तीसरी बड़ी सफलता तब मिली जब 19 जनवरी 2018 को भारत को ऑस्ट्रेलिया समूह (Australlia Group) का सदस्य बनाया गया।

ऑस्ट्रेलिया समूह रासायनिक, जैविक हथियारों के उत्पादन एवं प्रसार हेतु उपयोग में लाए जाने वाले सामग्रियों को नियंत्रित व रोक लगाने का प्रबंध करता है। यह 43 देशों का एक अनौपचारिक समूह है जिसका उद्देश्य रासायनिक में जैविक हथियारों के विकास पर रोक लगाना है।[10]

बहुपक्षीय निर्यात नियंत्रण व्यवस्था में भारत की सदस्यता भारत को वैश्विक मंच पर एक विश्वसनीय एवं जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में दर्शाता है या उपलब्धि भारतीय कूटनीतिक विजय के परिचायक होने के साथ–साथ एक सफल विदेश नीति का उदाहरण भी है जो भारत की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाता है।

विदेशी व्यापार में भारत की स्थिति

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की अर्थव्यवस्था में विदेशी व्यापार एक प्रमुख भूमिका का निर्वहन करता है।

विदेशी व्यापार के क्षेत्र में उस देश के सरकार द्वारा आयात–निर्यात संबंधी लिए गए निर्णय के साथ–साथ उस निर्णय से संबंधित नीतियां, उपाय एवं प्रक्रिया भी सम्मिलित होती है जिसके लिए कोई देश कार्य करता है।

भारत की आजादी के बाद से भारतीय विदेश नीति में आर्थिक राष्ट्रवाद का बोलबाला था सोवियत संघ के विघटन से पूर्व कुछ हद तक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का प्रयास तो किया गया लेकिन 1990 के दशक के प्रारंभ में आर्थिक संकट ने भारत को विदेश नीति पर पुनर्विचार हेतु प्रेरित किया।

भारत ने इस पर विचार करते हुए आर्थिक उदारीकरण की तरफ ध्यान देना शुरू किया परिणाम स्वरूप भारत का जीडीपी 17% से बढ़कर सदी के अंत तक 27% हो गया।

2004 के बाद नई पंचवर्षीय व्यापार नीति अपनाई गई और यह नीति कई संशोधनों से गुजरते हुए 2020 तक चलती रही।[11]और भारत की अर्थव्यवस्था पूर्व की अपेक्षा और अधिक मजबूत हुई।

इसके बाद कोरोना महामारी (कोविड 19) के चलते न केवल वैश्विक अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई अपितु भारतीय अर्थव्यवस्था भी इसके कुप्रभाव से बच न सका। कोरोना महामारी के कारण व्यापक स्तर पर घरेलू आपूर्ति और मांग प्रभावित हुई जिससे आर्थिक वृद्धि दर में गिरावट आने लगी।[12]

भारत ने दुनिया के तमाम देशों के साथ अपने आर्थिक रिश्तों को और धार देने का प्रयास किया और 2021 के बाद से अर्थव्यवस्था की इस तस्वीर में बदलाव देखने को मिला और भारतीय अर्थव्यवस्था में काफी मजबूती आने लगी, विदेशी व्यापार में तेजी से सुधार होने लगा, भारत के वित्त मंत्रालय की आर्थिक समीक्षा की रिपोर्ट के अनुसार भारत की विदेश मुद्रा भंडारण में अच्छी वृद्धि आई तथा कृषि एवं सम्बद्ध उत्पादों के निर्यात में 23.2 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की गई।

रक्षा के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भरता की ओर–

भारत का रक्षा क्षेत्र स्वतंत्रता के पश्चात कमजोर स्थिति में था जिसका खामियाजा में 1962 के भारत–चीन युद्ध में हार के रूप में देखना पड़ा इस हार के कारण भारत ने रक्षा क्षेत्र पर विशेष ध्यान देना शुरू किया 1965 और 1971 के भारत–पाक युद्ध में अमेरिका का खुलकर पाकिस्तान का साथ देना और भारत विरोधी रवैये के कारण भारत का सोवियत संघ की तरफ झुकाव बढ़ा और रक्षा के क्षेत्र में भारत सोवियत संघ का संबंध और प्रगाढ़ होता चला गया।

भारत रक्षा के क्षेत्र में अधिकांशतः सोवियत संघ से हथियारों का आयात करता है वैसे तो रक्षा के क्षेत्र में स्वदेशी करण का प्रयास काफी पहले से चला आ रहा है लेकिन 2014 में मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद से रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का काफी प्रयास किया गया तथा अधिकांश रूप में सफलता भी मिल रही है

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भू–राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने हेतु भारत रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने का पूरा प्रयास कर रहा है।

भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (Federation Of Indian Chambers Of Commerce And Industry- FICCI) के समन्वय द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में आत्मनिर्भर भारत पर भारत के रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि “आज भारत को आयत की जाने वाली एवं स्वदेशी वस्तुओं के मध्य संतुलन लाने की आवश्यकता है जिसके लिए भारत अधिकांशत स्वदेशी उत्पादन क्षमता पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहा है।”साथ ही उन्होंने आज की तुलना में पूर्व के समय में रक्षा उत्पादों के अधिग्रहण में देरी, मानक एवं विशेषता के साथ समझौते का भी जिक्र किया। रक्षा मंत्री ने आत्मनिर्भर भारत की सराहना करते हुए डेफएक्सपो–2022 की चौथी सूची जारी की जिसमें
लगभग चार सौ (400) से अधिक वस्तुओं का स्वदेशीकरण कर दिया गया है।[13]

इस क्रम में रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने हेतु डीआरडीओ(DRDO-Defence Research And Devevelopment Orgnisation) और इसरो(ISRO-Indian Space Research Orgnisation)ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

1958 में स्थापित डीआरडीओ भारत सरकार का शोध एवं विकास संस्थान है जो भारत के रक्षा क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने के साथ–साथ रक्षा बलों को स्वदेशी अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस करने का कार्य करता है इसके साथ ही 1969 में स्थापित इसरो भारत की अंतरिक्ष कार्यक्रम एजेंसी है जो अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत को नए–नए शोध एवं अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत को स्थापित करने का कार्य करता है।

भारत सरकार ने रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अधिकांश हथियारों व उनके पुर्जों तथा उनके सबसिस्टम के आयात पर रोक लगाते हुए इन्हें घरेलू उद्योगों से खरीदने का लक्ष्य बना रहा है।

सरकार की इस पहल के अनुसार अब हेलीकॉप्टरों लड़ाकू विमानों पनडुब्बियों और टैंकों में स्वदेशी पार्ट पुर्जे प्रयोग किए जाएंगे
अगस्त 2022 में भारतीय रक्षा मंत्रालय के अनुसार लगभग 2500 किस्म के कलपुर्जे इसमें शामिल हैं जिनका पूर्ण रूप से स्वदेशीकरण हो गया है तथा 458 ऐसे आइटम है जिनका स्वदेशी करण किया जा रहा है।

भारत सरकार ने रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए इस क्षेत्र में 100 फिसदी एफडीआई बढ़ाने, स्वदेशी निर्मित मिलिट्री हार्डवेयर खरीदने के लिए पृथक बजट बनाने की दिशा में कदम उठा रही है।[14]

लेकिन इसके साथ–साथ इस क्षेत्र में अनेक चुनौतियां भी विद्यमान है जैसे निजी क्षेत्र में भागीदारी की कमी, आधुनिक प्रौद्योगिकियों की कमी, अनुसंधान व विकास हेतु निवेश की कमी, डिजाइन क्षमता इत्यादि ऐसी चुनौतियां हैं जो आत्मनिर्भरता के लक्ष्य प्राप्ति के समक्ष एक बाधक के रूप में खड़ी हैं।

भारतीय विदेश नीति का मूल्यांकन

भारत के स्वतंत्रता से लेकर अगर वर्तमान समय तक की विदेश नीति में हुए बदलाव को अगर हम मोटे तौर पर समीक्षा करें तो यह देखेंगे कि भारतीय विदेश नीति में कई तरह के संरचनात्मक बदलाव हुए हैं।

नेहरूवादी आदर्शवाद के दायरे से निकलकर हम रणनीतिक यथार्थवाद और अब आर्थिक व्यवहारवाद की ओर बढ़ते जा रहे हैं जिसके मूल में राष्ट्रीय हित निहित है।

पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंधों के समय–समय पर बदलाव होने के साथ–साथ अनेक प्रकार की चुनौतियां भी आती रही हैं जिनको भारत द्वारा सुलझाने का प्रयत्न किया गया है। आज के वर्तमान परिदृश्य में भारत वैश्विक मंच पर एक मजबूत एवं प्रतिष्ठित देश बन चुका है, भारत का एशिया सहित विश्व के अन्य देशों के साथ सम्बन्ध न केवल मजबूत हो रहे हैं बल्कि भारत पूर्व एवं पश्चिम के संघर्षों को सुलझाने एवं संतुलन बनाने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत एशिया के छोटे राष्ट्रों की मूलभूत समस्याएं गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भुखमरी आदि को दूर करने हेतु उनके साथ पूरा सहयोग करने के साथ–साथ उनके विकास कार्यों में भी सहयोग दे रहा है।

भारत की विदेश नीति क्षेत्रीय विकास हेतु निर्मित बिम्सटेक(BIMSTECH-Bay Of Bengal Initiative For Multi-Sectoral Technical And Economic Cooperation),सार्क(SAARC- South Asean Association For Regional Cooperatin),बी0बी0आई0एन0(BBIN-Bangladesh, Bhutan, India and Nepal Motor Vehicle Agreement), आज के साथ परिपक्वता भरोसा तथा उदारता पूर्ण बर्ताव करने की आवश्यकता का भी अनुभव किया है।

इसके साथ ही कोविड–19 महामारी से भारत के निपटने की क्षमता एवं व्यवहार ने भारत के प्रति वैश्विक दृष्टिकोण में बदलाव किया है। इस मामले में जहां बड़े देशों की नीतियां फेल होती नजर आई वहीं भारत ने बड़ी ही सावधानीपूर्वक इस महामारी से निपटने में अपनी भूमिका निभाई, साथ ही मिशन– सागर जैसे अभियान चलाकर हिंद महासागर क्षेत्रीय देशों तथा अन्य पड़ोसियों तक दवा तथा अन्य राहत सामग्री पहुंचाने का काम किया। कोरोना महामारी के दौरान भारत द्वारा लगभग 150 देश को बिना मूल्य वृद्धि किए बिना किसी शर्त के निर्बाध रूप से कोरोना की दवा सप्लाई की गई।[15]

भारत सरकार का स्किल इंडिया डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया जैसे अनेक विकास कार्यक्रम भारत के भविष्य की संभावनाओं और उत्पादन की चुनौतियों के दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण कदम हैं। कृषि के क्षेत्र में भी भारत में अनेक चुनौतियों से निपटने हेतु भूमि सुधार, श्रम सुधार एवं उत्पादन बढ़ाने हेतु अनेक आवश्यक कदम उठाए हैं।

References: संदर्भ सूची

1. डा० पुष्पेश पंत,एवं श्रीपाल जैन, अंतरराष्ट्रीय राजनीति, मीनाक्षी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या –19 एवं 287, एकेडमिक प्रेस–मेरठ, ISBN : 978–81–932973–9–1
2. डॉ० लल्लन जी सिंह, आधुनिक राज्य का रक्षा तंत्र भारत के विशेष संदर्भ में, प्रिंटर्स किंग, दिल्ली , पृष्ठ संख्या–1, ISBN : 978–93–91984–40–3
3. Dr. Reeta Vashishta,(Secretary to the Of Govt. of India), The constitution of India,[As on 26th November, 2021]
4. Margenthau, H. J., Politics Among Nations.,: The Struggle For Power and Piece, (New Delhi: Kalyani Publishers-1985)- Page-31
5. Person, F. S. and Rochester J. M., International Relations : The Global Condition in the late Twentieth Century, MC. Grawhil Publishing company, - 1988, p-12
6. वर्ल्ड फोकस, 2019, भारत के पड़ोसी देश ,मोदी की विदेश नीति की प्राथमिकताएं, पेज नंबर– 24
7. D.Norman. Palmer & Parkins C. Harward & International Relations: New Delhi: CBS Publishers & Distributors, - 2011, Page No- Eleven

8. V.K. Malhotra. International Relations : New Delhi, Anmol Publication, Private Limited- 2001, Page Number- i
9. Malhotra V. K. International Relations : New Delhi, Anmol Publication, PVT-Limited-2001, PN-1
10. Manas Chakraborti, The Kashmir Issue, Bone of Contention in India- Pakistan Relations, Sylvia Mishra, (Ed) Studies On Pakistan,New Delhi, Paragon International Publisher 2014, Page N- CLXXXII
11. Harsh- V- Pant,ORF, 6 August 2019.
For more Details see the below link
https://www-google-com/amp/s/www-orfonline-org/hindi/research/looking&back&looking&ahead&foreign&policy&transition&under&modi&54121/
12. अचल कुमार मल्होत्रा, (विशिष्ट व्याख्यान) , विदेशी मंत्रालय, भारत सरकार, 18 दिसम्बर– 2019
or,
https://www-mea-gov-in/distinguished&lectures&detail&hi-htm\864
13. K-V-Keshavan] Observer Research Foundation ¼ORF½] India's Act East Policy and Regional Cooperation] 14 February& 2020
Or,
https://www-orfonline-org/eÛpert&speak/indias&act&east&policy&and&regional&cooperation&61375/\amp
14. Press Information Bureau, Government of India, Ministry of External Affairs, act east policy, 23-December-2015
For more details
https://pib-gov-in/newsite/printrelease-aspÛ\relid¾133837
15. https://www-thehindubusinessline-com/news/india&in&mtcr&club&can&now&eÛport&arms/article64124008-ece
16. जागरण, ई–पेपर, प्रकाशन एवं अद्यतन तिथि– 8 दिसम्बर– 2017
For more details
https://www-google-com/amp/s/www-jagran-com/lite/news/national&wassenaar&arrangement&decides&to&make&india&its&member&17166226-html
17. www-livehindustan-com, published date -19 jan 2018,9:50 pm
Or see the below link
https://www-google-com/amp/s/www-livehindustan-com/national/story&india&became&a&member&of&australia&group&strong&claim&in&nsg&1758292-amp-html
18. डा० अरुन्धती शर्मा, भारत की विदेश व्यापार नीति में परिवर्तन पर विशेष रिपोर्ट, विश्व मामलों की भारतीय परिषद, सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड,नई दिल्ली, 19 अप्रैल –2017
Or,

https://www-google-com/url\sa¾t&source¾web&rct¾j&url¾https://www-icwa-in/showfile-php%3Flang%3D2%26level%3D3%26ls_id%3D4417%26lid%3D3293&ved¾2ahUKEwj98LqE6ef8AhXk6zgGHQO7BrMQFnoECDEQAQ&usg¾AOvVaw2zGÛLUkwuNCcAIKlrhPrlC

19. सिंह, संजय, (ओ. आर. एफ.),कोरोना वायरस के कारण भारत में पैदा हुई आर्थिक चुनौतियां, 20 अप्रैल–2020
or,
https://www-google-com/amp/s/www-orfonline-org/hindi/research/economic&problems&created&in&india&due&to&coronavirus&64899/

20. प्रेस सूचना ब्यूरो,रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार–20, अक्टूबर–2022,(रक्षा मंत्री ने भू–राजनीतिक चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए (आत्मनिर्भरताश के माध्यम से तैयारी करने पर जोर दिया)
or,
https://pib-gov-in/PressReleasePage-aspÛ\PRID¾1870404#:~:teÛt¾%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE%20%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80%20%E0%A4%A8%E0%A5%87%20%E0%A4%B8%E0%A4%B6%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%20%E0%A4%AC%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%82]%E0%A4%85%E0%A4%AC%20%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6%E0%A5%80%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%A3%20%E0%A4%B8%E0%A5%82%E0%A4%9A%E0%A5%80%20%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82%20%E0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A4%82%E0%A5%A

21. https://www-google-com/amp/s/www-livehindustan-com/national/story&phased&import&ban&on&780&defence&items&in&self&reliance&push&7001241-amp-html

22. The economic times Newspaper
Or,
https://www-google-com/amp/s/health-economictimes-indiatimes-com/amp/news/policy/india&sent&medicine&to&150&countries&during&covid&crisis&minister&mansukh&mandaviya/98557461